यात्रा–संस्मरण

म्हारी जापान यात्रा

राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

लेखिका–परिचै

राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रौ जनम वि. संवत् 1973 में मेवाड़ रियासत रै देवगढ़ ठिकाणै में होयौ। उणां रौ ब्याव बीकानेर रियासत रै रावतसर ठिकाणै रा रावजी सागै होयौ। बाळपणै सूं ई साहित्य कांनी आपरौ लगाव हौ। राजस्थानी संस्क्रति सूं गैरै लगाव रै कारण आप उणरी घणी ई भणाई करी। आपरी राजस्थानी में लिख्योड़ी पोथ्यां इण भांत है– 'मांझळ रात', 'गिर ऊंचा ऊंचा गढां', 'मूमल', 'कै रे चकवा बात', 'अमोलक बातां', 'हुंकारो दो सा' अर 'टाबरां री बातां'। अै सगळा कहाणी–संग्रै है। राजस्थानी लोकगीत, राजस्थानी दोहा संग्रह, जुगल–विलास अर वीरवांण राणीजी री सम्पादित पोथ्यां है। आं रै अलावा राणीजी हिन्दी में ई मोकळी पोथ्यां लिखी है। इण भांत राजस्थान रै साहित्यकारां में आपरी लूंठी ठौड़ है। यात्रा–विवरौ लिखण मांय आपनै महारत हासल हौ। 'हिन्दुकुश के उस पार' नांव री पोथी इणरौ पुख्ता प्रमाण है। राणीजी साहित्य–सेवा रै सागै–सागै सामाजिक, राजनीतिक अर सांस्कृतिक ज्ञान री मोकळी प्रवृत्तियां सूं जुड़ियोड़ा हा। विदेसां में केई कान्फ्रेंसां में आप भारत रौ प्रतिनिधित्व करियौ।

पाठ–परिचै

सन् 1959 में जापान में हुवण वाळी 'अेंटी अेटम हाइड्रोजन बम वर्ल्ड कान्फ्रेंस में भाग लियौ। उण यात्रा रौ औ वरणन रोचक अर प्रवहमान सैली में करियोड़ौ है। इणनै पढतां पांण जापानी जनजीवण, सांति–स्मारक, म्यूजियम, हिरोशिमा री विधंसक लीला, सांति मार्च री रंगीली दृश्यावली आद पाठक रै हियै मांय तस्वीर जियां मंड जावै। म्यूजियम मांय देख्या चित्रामां सूं मिनखां रै हिरदै मांय करुणा रा भाव जाग्या अर सगळा मन ही मन निस्चै करयौ कै अैड़ौ विणासकारी जुद्ध भविस में नीं होवै, नीतर स्रिस्टी रौ विणास व्है जावैला। इण विध्वंसक लीला में लील हुया जुझारां री देवळी जाय'र सगळा नतमस्तक होवै।

म्हारी जापान यात्रा

(1)

जापान रौ असली नाम जापान नीं है। उणरौ असली नाम निप्पोन है। जापानी आपरा देस नैं निप्पोन कैवै। परदेसियां रा अशुद्ध उच्चारण सूं निप्पोन जापान बणग्यौ।

जापान देस चार टापुवां सूं बण्योड़ौ है। आं में होन्शू टापू सबसूं मोटौ है। टोकियो, ओसाका, क्योटा, हिरोशिमा वगैरा जापान रा खास–खास शहर इणी'ज टापू में बसियोड़ा है। बीकिना रा तीन टापू इण सूं चिप्योड़ा है। उतराद में होकायडो टापू है, दिखणाद में सिकोकू अर क्यूसू। इणां रै अलावा जापान रै समंदर में छोटा–छोटा हजारूं टापू बिखरियोड़ा बसिया है।

टोकियो रै हेनेडा हवाई टेसण पर उतरतां ई घड़ी सांम्ही झांकी। कळकत्तै रै और बठै रै टैम में तीन घंटां रौ फरक हौ। आ बात कैवणी पड़ैला कै अठै रा कस्टमवाळा भला आदमी हा। कांई आतां, कांई जातां, सामान रै हाथ ई नीं अड़ायौ, कोई पूछताछ ई नीं करी। पासपोर्ट देख झटपट छाप लगा, सीख दे दी।

म्हांनैं प्रिंस होटल में उतारिया। औ तौ म्हैं टोकियो में पूगतां ई देख लियौ कै अठै नक्सां रौ जोर है। म्हारै कमरै में नक्सौ टांगियोड़ौ हौ। कांफ्रेंस री ओर सूं म्हांनै कागजात दिया हा, उणां में ई नक्सो नत्थी हौ। गेलै में जिण किणी नैं ई म्हैं गेलो पूछियौ, उण झट कागद–पेंसिल काढ नक्सो मांड म्हनैं गेलौ बतायौ। टैक्सी ड्राइवर नै कठैई जाबा नै कहियौ तौ झट देणी नक्सौ जेब सूं काढ म्हारै मूंडागै राखियौ। जिण जागां जावणौ हुवै, नक्सै में बता देवौ। बठै नक्सै सिवाय कोई बात ही नीं। रेलां में सफर करबावाळां सारू ई नक्सा मौजूद।

(2)

उण ईज दिन सांझ री गाडी सूं म्हांनै हिरोशिमा जावणौ हौ। टोकियो टेसण माथै पूगिया। टेसण री इमारत में बड़िया, पण बठै नीं तौ प्लेटफारम ई दीख्यौ, नीं गाडी दीखी, नीं इंजन नजर आयौ। अचंभै में पड़गी– च्यारूं पासी दुकानां ई दुकानां।

जापान कोंसलवाळा म्हांनैं कैयौ हौ कै आपनै हिरोशिमा तक पूगावा नै म्हांरौ आदमी साथै दे देवांला। वो आपनै सांझ नै टेसण पर मिळ जावैला। गाडी छूटण री बेळा नजीक आयगी। म्हैं उडीकता उकतायीजग्या। टेसण पर भीड़ घणी ही। नीं तो गाइड म्हांनै ओळखै, नीं म्हे गाइड नै ओळखां। अैन बगत पर गाइड हांफतौ थकौ आयौ। आवतां ई म्हनै देख बोलियौ– भलो हुवौ थांरी इण साड़ी रौ जो इणनै देख म्हैं थांनैं ओळखिया।

गाइड म्हांनैं लेय ऊपर चढियौ। म्हैं सोचण लागी– आपां नैं तौ गाडी चढणौ है। औ ऊपर कठै ले जावै है? ऊपर आवतां ई देखियौ कै प्लेटफारम पर आयग्या हां। गाडी मूंडागै ऊभी ही। समझ में नीं आयौ कै ऊपर चढियां गाडी किण तरै आयी। नीचै झांकी। बाजार, सड़क, दुकानां नीचै ही। टोकियो में आबादी घणी होवा सूं रेलां दुकानां री छातां पर चालै। टोकियो शहर में रेलां रौ जाळ–सो गुंथियोड़ौ है– आगै–पाछै, डावै–जीमणै, ऊंचै–नीचै धड़धड़ करती रेलां चालती रैवै।

जापानियां नैं आपरी रेलां रौ टाइम री पाबंदी रौ घणौ अंजस है। बठै रेलां लेट नीं हुवै, कदेई हुवै तौ कुछ सेकंडां सारू ईज। म्हांरी गाडी हिरोशिमा आडी भागी जावै ही। रेल री पटड़ी रै दोनां आडी नै खेतां में अर जंगळ तक में बिजळी रा तारां रा खंभा रुपियोड़ा बतावै हा कै अठै उद्योग रौ कित्तौ विस्तार है। घरां माथै टेलीविजन रा अेरियलां रा खंभा साम्हीं आंगळी दिखाता जापानी सज्जन श्री फुकुसिया बोलिया– अै अेरियलां रा थोक देखनै आप अंदाजौ लगा लिरावौ कै जापान में कितरा टेलीविजन है।

सैकड़ां कोसां री मुसाफरी में देखियौ कै जापान में अेक आंगळ धरती बेकार कोनी पड़ी। मानलो कठैई जमीन खेती रै लायक कोनी, पाणी रौ खाडौ ई है, तौ उणनैं ई काम में ले राखियौ है। बीं खाडै में कमल ई बाय दिया। कमल री डांडी, बीज, पत्ता, फूल, पांखड़ियां रौ साग बणावै।

(3)

ता. 31 जुलाई, 1959 नै सुबै 10 बजियां हिरोशिमा में विश्व सम्मेलन सरू हुयौ। प्रतिनिधि टैम सूं पैलां ई भेळा हुवण लागग्या। म्हैं बारै

बरामदै में ऊभी ही। अचाणचक अेक लांबी बाढ रा सरदार टोप उतार माथौ झुकाय मुजरौ करियौ। बोलिया– आप जरूर हिन्दुस्तान सूं आया हौ, म्हैं आस्ट्रेलियन हूं। पांच बरस दक्खण–भारत में रियोड़ौ हूं। आप किसै प्रदेस सूं आया हौ?

म्हैं कैयौ– राजस्थान री हूं।

–आछौ! आछौ! उदैपुर तक म्हैं ई गयोड़ौ हूं, म्हारौ नाम अेंड्रयूज ह्यूज है। म्हनै मराठी बोलबा री घणी मन में आय रैयी है। आपरै साथ वाळां में कोई मराठी बोलणियौ है कै नीं?

दूजै दिन म्हैं उणां नैं म्हारै प्रतिनिधि मंडळ रा नेता श्री हिरे सूं मिलाया। ह्यूज वांसूं मराठी में धड़ाधड़ बात करबा लागा। मराठी रै 'ळ' आखर रौ उच्चारण वै घणौ सुद्ध करता। म्हनै उणां रै 'ळ' रै उच्चारण पर खुसी हुयी अर अचंभौ ई आयौ। आपणै अठै रा हिन्दी बोलणियां भायां सूं खासकर उत्तर प्रदेस अर बिहार वाळां सूं 'ळ' बोलणी नीं आवै। 'ळ' रौ प्रयोग राजस्थानी, पंजाबी, गुजराती अर मराठी में तो खूब हुवै।

इण 'ळ' नैं लेयनै म्हनैं अेक जूनी बात याद आयगी। बीकानेर राज में महाराजा गंगासिंहजी रै बगत में महाजन रा राजा हरिसिंहजी ठावा सरदार हा। बीकानेर राज में उणां दिनां अेक हुकम निकाळियौ कै राज री नौकरियां में बीकानेर रा लोगां नैं ई राखिया जावै। फलाणौ बीकानेरी है कै नीं, इणरौ इम्तिहान घणी बिरियां महाजन–राजा साहब लिया करता। इण इम्तिहान री जरूरत यूं आयी कै घणा जणा नकली सर्टीफिकेट ले बीकानेरी बण जावता। उम्मेदवार री जांच करबा वै राजा साहब उणनैं पूछता– बोलो खळळ–खळळ। बाहरवाळां सूं सुद्ध उच्चारण नीं करणी आवतौ और वै बोलता खलल–खलल। उण ई बगत राजाजी फैसलो सुणा देता– थारै बीकानेरी होवण में खलल है भाया।

श्री ह्यूज महाराष्ट्र री मांयली बातां री घणी जाणकारी राखै। बठै री जनजातियां रै जीवण अर संस्कृति री बातां सुणाबा लाग्या तौ मन में म्हनै घणी सरम आई। म्हैं तौ वां जनजातियां रौ नाम ई नीं सुणियौ।

(4)

कान्फ्रेंस हाल रै बारै ऊभा प्रतिनिधि लोग गप्पां लगाय रैया हा। गरमी तेज पड़ री ही। जापान में छातां रा पंखा तो हुवै ई नीं। सब जणा हाथां में जापानी कागज रा पंखा लीधां हिलाय रैया हा। सूडान रा प्रतिनिधि इजिप्ट री लुगाई प्रतिनिधि मिस करम नै बतळायी– गरमी तौ अठै ई आपां जिसी पड़ै है पण जापानी आपां जिसा काळा क्यूं कोयनी? पश्चिमी जर्मनी रौ प्रतिनिधि हाफूं–हाफूं करतौ फूंकां देतौ फिर रैयौ हौ– मर गयौ गरमी आगै, म्हैं तौ कालै परौ जावूंला।

यूरोप री अेक जवान लुगाई प्रतिनिधि आपरै बटवै सूं काढै अर यूडीकोलन री सीसी नै छांटै माथै पै। म्हैं कनै बैठी, म्हारै ई ललाट रै उण यूडीकोलन लगायौ। म्हैं कैयौ– म्हनै इसी ज्यादा गरमी कोनी लागै। म्हैं राजस्थान री अर बा ई तपतै बीकानेर री रैवणवाळी, जठै इणसूं बेसी गरमी पड़ै।

जिण भवन में कान्फ्रेंस हुई उणरै भेळै ईज सांति स्मारक म्यूजियम हौ। घणखरा म्हे वौ म्यूजियम देखण लागग्या। इण म्यूजियम में हिरोशिमा में जीं अैटम बम सूं तबाही हुई ही उणरी तसवीरां, नक्सा अर आंकड़ा जमाय राखिया है। पूरौ विवरण उण प्रळै रौ देय राखियौ है। उण महानाश रा राखसी करमां नै देख बजर री छातीवाळां रै ई आंसू आयां बिना नीं रैवै। भींत पै अेक मोटी सारी तसवीर लाग री। उणमें धूंवै रौ मगरै रौ मगरौ लपता

लगोलग ऊंचौ चढ रैयौ है। अैटम बम रै फूटतां ई हिरोशिमा नै आपरी काळी छाया में ढांकतो औ फोटू चार हजार मीटर दूरां सूं खैंचियौ हौ। 1945 री छह अगस्त सुबै अैन आठ बज'र 15 मिनट पै अेक अमेरिका रै विमाण बम फेंकियौ। वौ सत्यानासी विमाण बम फेंकतां ई नटाटूट पाछै पगां भागियौ। वौ इसौ तेज भागियौ कै बम फूटै–फूटै जीं रै पैलां 16 किलोमीटर भागनै दूर निकळग्यौ।

बम जमीन सूं 570 मीटर ऊंचौ आकास में फूटियौ। धरती पर पड़'र फूटबा सूं इतरौ नास नीं हो सकै, क्यूंकै बम में इतरी ताकत ही कै जमीन में धंस जावतौ। जकां मिनखां बम नैं आकास में फूटतौ देखियौ वां बतायौ कै बम फूटतां ई इसौ लाग्यौ जाणै परचंड सूरत धरती पै उतर रैयौ है। बम फूटियौ जिण वेळा उणसूं गरमी निकळी, वा दो लाख सेंटीग्रेड ही। सौ सेंटीग्रेड गरमी में पाणी उकळबा लाग जावै। वा गरमी ही दो लाख। भूंगड़ा तिड़कै ज्यूं मिनख तिड़कग्या। वो धूंधै रौ बादळौ, जिणनैं आणविक बादळ कैवै, अड़ताळीस सैकिंड में तीन हजार मीटर ऊंचौ चढियौ। साढी आठ मिनट में तौ नौ हजार मीटर ऊपर चढग्यौ। पंद्रह मिनट पछै इण बादळै में सूं बरखा होवण लागी। दो घंटां तांई बराबर कादौ बरसतौ रैयौ। रेडियौ सक्रियता रा जो कण धूंधै रै सागै ऊपर परा गया हा, उणां नै बरखा पाछा नीचै ले आयी।

बम फूटबा रै 20 मिनट पछै नीचै जमीन पै लाय लागगी। लकड़ी रा अर बांसड़ां रा जंगळ भभक–भभक बळबा लागग्या। छोटा–मोटा सब घर भसम होयग्या। आखै ई शहर में खाली छाईस अर अधबळिया रैयग्या। नदियां रा पुळ टूटग्या। गाडी री पटड़ियां बांकी हुयगी। गरमी इतरी हुयी कै लोह कांई पत्थर पिघळग्या। हिरोशिमा लाय री लपटां में समायग्यौ। तीन दिनां तांई धूं–धूं बळतौ रैयौ। हरियौ–भरियौ जंगळ अर शहर राख रौ ढिगलौ होयग्यौ।

(5)

इण कयामत में लोग–लुगायां, टाबर–टींगरां री दुरदसा हुयी, उणरी बात तौ कैवण जोग ई कोयनीं। आंखियां देखियोड़ा हाल, बठैवाळा सुणाय रैया हा। म्हारै में तो सुणबा री हीमत ई कोयनी ही, काळजौ कांप–कांप जातौ। लपटां आभै रै अड़ री ही, मिनख बरळाय रैया, टाबर चिरळाय रैया, कुण–किणरी सुणै, कुण किणनैं बचावै मरिया–बळिया! लपटां में भसम! इण भयंकर कांड री याद सूं ईज मिनख री चेतना परी जावै। 2 लाख 40 हजार लोग–लुगाई अर टाबर बरळावता थका जींवता बळग्या। 51 हजार बुरी तरह घायल होयग्या। अेक लाख आसरै मामूली घायल हुया।

इण नरमेध में जळनै मर गया वां तौ सुख पायौ, पण ज्यांरी सांसां बाकी रैयगी वै जींवती लासां 'पाणी–पाणी' कर री ही, पण पाणी रै जबाब में काळ उणां नै लाय री लपटां में छानौ कर देतौ। डील रा गाभा बळग्या, डोळ सूजग्या।, केस बळग्या, चामड़ी अर हाडकियां बळनै लटकग्या। अै नर–कंकाळ चेतौ आवतां ई करळावता– 'पाणी–पाणी'। पाणी कठै? पावावाळौ कुण? आपणै पुराणां में जी रौरव नरक रौ वरणन कीधौ, वौ इणरै आगै तुच्छ है। जो हाल तसवीरां में देखियौ अर जो देखणवाळां रा मूंडा सूं कानां सुणियौ उणनैं लिखबा नै अर कैबा नै कोई लबज ई नीं। म्यूजियम नैं देखतां मन दुख, ग्लानि अर अंतर्दाह सूं बळबा लागग्यौ। मन में रैय–रैय औ सवाल ऊठतौ– मिनख इसौ हत्यारौ हो सकै है? अै देख रैया हां जो साची तसवीरां है? हे भगवान! मिनख रै साथै औ बरताव कीधौ? मिनख ई इसौ हौ सकै तौ पछै राखस, पिसाच, दैत्य इणसूं ज्यादा कांई हुवैला?

(6)

हिरोशिमा रै सत्यानास रौ जापानियां रै दिल अर दिमाग पै घणौ असर पड़ियौ। बठै रा साहित्यकारां रै आगै तौ आज ई हिरोशिमा सूं हीज बळ रैयौ है अर राष्ट्रीय चेतनावाळा जापानियां रा काळजा में तौ आ होळी पीढियां तांई सुळगती रैवैला।

अेक चितराम हो 'भूतां री सवारी'। हिरोशिमा में लाय लागबा रै तुरन्त पछै री छिबी ही। घूंवै सूं काळा पड़ियोड़ा नर कंकाळां रौ झुंड ज्यांरा कपड़ा बळग्या; नागा, चामड़ी फाटियोड़ी, गाभा ज्यूं लटकियोड़ी, हाथ मूंडा सूजियोड़ा, दुख सूं होस–हवास गायब, ज्यां में अत सूझै न गत, बिचळायोड़ा, ढूंढा ज्यूं वीरान हुयोड़ी गळियां में बेमतळब भटक रैया। उण बगत री असली हालत ही आ। अेक चित्र और हौ। अैटम बम सूं निकळी बेहिसाब गरमी सूं लोग घबरायग्या।

घायल 'पाणी–पाणी' कर रैया। पाणी कठै? नळां री लैणां टूटगी। चारूं आडी नै लाय लागरी। तिसिया मरतां कंठ सूख रैया। सरीर घावां सूं चिरीज रैया। 'पाणी–पाणी' करता नदी साम्हीं दौड़िया। दौड़णौ वांसूं ताबै आय नीं रैयौ, सांस लेणाो ई नीं आय रैयौ। उठता–पड़ता नदी रै किनारै जाय पाणी रै होठ लगायौ। हा बठै रा बठै ठंडा पड़ग्या। नदी रै किनारै लोथां रा ढिगला लागग्या। हिरोशिमा सहर रै मांयनै सात नदियां बैवै अर सातूं नदियां लोथां सूं भरगी।

सुबै रौ बगत हौ। टाबर पढण नै गया हा। अेक दिन पैलां हवाई हमलै सूं टूटियोड़ा घरां में मदद सारू जाबा रौ स्कूल रा टाबरां रौ प्रोग्राम हौ। मास्टरां रै लारै स्कूलां रा टाबर टोळा रा टोळा मदद सारू जाय रैया हा। उणी'ज बगत वौ हत्यारौ पापी बम पड़ियौ। 'मां–मां' करता भोळाभाळा मूंडा रा टाबर बठै रा बठै सीझग्या। उण वेळा रौ चितराम देखणी नीं आवै। आज ई हिरोशिमा री मांवां आधी रात रा 'सणण–सणण' करतै बायरै में 'मां–मां' रोवता टाबरां रा हेला सुणै।

म्हारै सूं तौ वै चितराम देखणी नीं आया। आंखियां मींचनै बैठगी। चितरामां नैं देख–देख हिरोशिमा री जापानी लुगायां रोय री ही। उणां रै मूंडागै उणां रा टाबर यूं ही 'मां–मां' करता, बळता–बरळावता मरिया हा। कितरा ई टाबर बठै ऊभा–ऊभा आपरा मां–बाप नै याद कर रोय रैया हा। हे भगवान! वौ नजारौ याद आवै जद आज भी म्हारौ काळजौ थर–थर करबा लाग जावै।

(7)

इण विस्व सम्मेलन में संसार रा सारा ई देसां सूं प्रतिनिधि आया हा। अमेरिका सूं ई पांच–सात सरदार आया हा। उणां में डॉ. पोलिंग ई हा। डॉ. पोलिंग अमेरिका रा नामी रसायन शास्त्री है। आणविक अस्त्रां नै काम में लेबा पछै उणां रौ कांई–कांई असर दुनिया माथै हुवै, इण विषय में डॉ. पोलिंग घणी सोध कीधी है। इणी'ज काम माथै आंनै नोबल पुरस्कार मिळियौ।

डॉ. पोलिंग सम्मेलन में घणा जोरदार बोलिया। डॉ. पोलिंग रौ भाषण सुण, सुणबा वाळां रा कानां री खिड़कियां खुलगी। आगै दुनियां अंधारी दीखबा लागी। म्हारा रामजी! आं मोटा देसां रा मोटा लीडरां नै जे कुबुद्धि आयगी तौ आ दुनियां, जिणनैं हजारां बरसां सूं मानवी सजावतौ, सिणगारतौ खपग्यौ है, अेक पळ में गारत हुय जावैला।

जापान रा लोगां इण अणुबम–विरोधी विस्व सम्मेलन रै मौकै पै बडौ जबरदस्त सांति मार्च कीधौ। दूर–दूर सूं मिनख पगां चालता, मार्च करता, हिरोशिमा तक आया। तावड़ै सूं छाया राखबा नै चारै रा गूंथियोड़ा मोटा–मोटा टोप माथै मेल राखिया हा। लांबी,

खूब लांबी सवारी निकळी। सगळां सूं आगै तौ पैदल मार्च करनै आवणियां, उणां रै लारै विदेसां सूं आयोड़ा प्रतिनिधि; पाछै हिरोशिमा री अणपार जनता।

भरी दुपैरी। कोई तीन बजियां रौ तावड़ौ तड़क रैयौ। सूरज कड़ रैयौ। सवारी चाली। म्हां लोगां रै आप–आपरा देसां रा झंडा हाथ में। पसीनौ टपक रैयौ। गेलै रै दोई आडी नै मानखौ मावै नीं। थाळी फेंकै तौ आंगणै नीं पड़ै। दुकानां री, घरां री छातां मिनखां सूं लद री। छातां पर सूं आदम– लुगायां फूलां री बिरखा कर रैया। रंगियोड़ा कागजां री कतरण री पुष्प–बिरखा करणै री बठै रीत है। ऊंची–ऊंची हवेलियां सूं कागज रा फीता नीचै म्हांपै लटकाय रैया। फूलां सूं सड़क भरगी। माथा पै रंग–रंगीला कागज रा फीता लटक रैया। टेलीविजन सारू तस्वीरां खैंचबा नैं हेलीकाप्टर माथा पै आय–आय, उड–उड जाय रैयौ।

औ उछाह अर सुवागत जापानियां उणां लोगां रौ कीधौ जो आणविक अस्त्र पै पाबंदी लगाबा री आवाज उठाबा नै देस–विदेस सूं समंदर लांघनै आया– पैदल चालता, शांति मार्च करता, देस रा खूणां–खूणां सूं, टापू–टापू सूं बठै आया। यूं तौ च्यारूं कानी हरख–उछाह नजर आय रैयौ हौ, पण जनता पै जमनै नजर नाखबावाळां नैं अंतस में और ई बात दीखी। सड़क रै दोई कानी ऊभी लुगायां रा रुमाल आंसूड़ां सूं आला हा। औ मार्च देख उणां री आंख्यां आगै चवदा बरसां पैलां रौ नजारौ छायग्यौ। वांनै घरबीती याद आय रैयी ही। वांरा हिवड़ा हबूका लेबा लागग्या। वै आंसूड़ा पूंछती जायरी ही, अर फीका–फीका मूंडां सूं मुळक नै सांति–सैनिकां रौ सुवागत करती जाय री ही। उणां रै अंतर रौ अंदाजौ लगाणौ कोई कठण नीं हौ। सगळी जापानी मावां री अेक आवाज ही– म्हांरा टाबरां री खैरियत सारू सांति री आवाज उठावौ।

मार्च करण नै आवणियां अर परदेसां सूं आयोड़ा प्रतिनिधियां सारू उणां रै मन में घणौ मान हौ। मार्च करणियां नै रोक–रोक पाणी री गिलासां लुगायां झलाय री ही। म्हनैं तावड़ै में कळमळाती देख अेक लुगाई आपरै माथै रौ टोप उतार म्हारै माथै पै मेल दीधौ; अेक जणी आपरौ पंखौ म्हारै हाथ में झलाय दीधौ। म्हनैं कड़कड़तै तावड़ै में तपती अर पसीनै सूं लथपथ देख उणां नै दुख हो रैयौ हौ। यूरोप सूं आयोड़ा प्रतिनिधि तौ तावड़ै सूं लाल बम्ब पड़ग्या। उणां रा कान तौ इसा राता होयग्या कै जाणै अबार लोही टपक पड़ैला।

सवारा सूधी जूझारां री देवळी पै गई। अैटम बम सूं मरियोड़ां री याद में काळै भाठै री समाधि बणायोड़ी है। सगळा जणां बठै जाय माथौ झुकायौ, ढोल पै ताल लागी। ताल रै सागै बैंड री धुन गगन गुंजाय दीधौ–

never again the atom Bomb

कदैई नीं, अबै अैटम–बम कदैई नीं।

सुर में सुर मिलाय लाखां कंठ गावा लागिया–

अैटम–बम कदैई नीं, कदैई नीं।

कदैई खाली बैठी रैऊं तौ उण सांझ री वै गैरी भावनावां याद आय जावै अर म्हैं बां में गम जावूं।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

चिपियोड़ो=जुड़्योड़ौ, मिल्योड़ौ। झांकी=देख्यौ। पूगतां ई=पोंचता ई। मांड=कोर नै, बणाय नै मूंडागै=मूंडै सांम्ही, मूंडै आगळ। लारै ई=सागै रा सागै। बड़िया–मांयनै गया। उडीकतां–बाट जोवतां। ओळखै–पिछाणै, जाणै। गैरी=घणी, सांघणी। अंजस=गुमेज, गौरव। वाय दिया=बो दिया, बीज दिया। लांबी वढ रा–लांबै कद रा। वगत–बखत, समै। फलाणी=अमुक। घणी विरियां–केई बार। खलल=अटकाव, विघन। मांयली=भीतर री। तबाही=विणास। नटाटूट=घणै वेग सूं। कादौ=कीचड़। कयामत=प्रळय। बरळाय रया=चिरळाय रैया। लबज=लफज, सबद। गारत=बरबाद। अंतस में=मन मांय। हिवड़ा–हिरदौ। हबुका–हूक। देवळी–समाधि। गम जाऊं=खो जाऊं।

सवाल

विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'म्हारी जापान यात्रा' किण विधा री रचना है–
   (अ) कहाणी (ब) निबंध
   (स) यात्रा संस्मरण (द) रेखाचितरांम
   ( )

2. डॉ. पॉलिग किण देस रा नामी रसायन शास्त्री है–
   (अ) अमेरिका (ब) जापान
   (स) फ्रांस (द) रूस
   ( )

3. 'म्हारै सूं तो वै चित्राम देखणी नीं आया।' इण कथन सूं किसौ भाव प्रकट होवै–
   (अ) भय (ब) अचरज
   (स) करुणा (द) दया
   ( )

4. 'सवारी सूधी जूझारां री देवळी पै गयी' सवारी देवळी पर क्यूं गयी–
   (अ) देवळी रौ फुटरायौ देखण नै (ब) जूझारां नै माथौ टेकण नै
   (स) सम्मेलन री सरुआत करण नै (द) मरियोड़ा नै याद करण नै
   ( )

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. जापान रौ असली नाम कांई है?
2. हेनेड़ा हवाई–टेसण जापान रै किसै सहर में आयोड़ौ है?
3. अणजाण गाईड लेखिका ने किण कारण पिछाण लिया?
4. डॉ. पॉलिग नै किण काम माथै नोबल पुरस्कार मिलियौ?
5. जापान रा लोगां नै किण बात रौ घणौ अंजस है?

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. श्री ह्यूज री बातां सुण'र लेखिका नै सरम क्यूं आई ?
2. "जापानी लोग धरती रौ सागैड़ौ उपयोग करै।" इण ओळी रै अरथ रौ खुलासौ करौ?
3. "शांति स्मारक देख बजर छाती वाळा रै आंसू आया बिना कोनी रेवै।" समझावौ।
4. "राष्ट्रीय चेतना वाळा जापानिया रै काळजै में तो आ होळी पीढियां तांई सिळगती रैवैला।" आ किसी होळी है ?

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. जापानिया रै स्वावलम्बी जीवण अर आतिथ्य–सत्कार रौ दाखला देय'र खुलासौ करौ?
2. हिरोशिमा माथै अेटम–बम फूटौ जद उठै कांई हाल हुयौ ? पाठ रै आधार माथै वरणन करौ।
3. अणुबम विरोधी विश्व सम्मेलन रै मौके जापानियां रै शांति मांर्च रौ नजारौ आपरै सबदां मांय प्रकट करौ?
4. नोबल पुरस्कार री जाणकारी कर बतावौ कै आज तांई ओ पुरस्कार किण–किण भारतीयां नै मिलियौ है?
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) सैकड़ां कोसां री मुसाफरी में देखियौ कै जापान में अेक आंगळ धरती बेकार कोनी पड़ी। मानलो कठैई जमीन खेती रै लायक कोनी, पाणी रौ खाडौ ई है, तौ उणनैं ई काम में ले राखियौ है। बीं खाडै में कमल ई बाय दिया। कमल री डांडी, बीज, पत्ता, फूल, पांखड़ियां रौ साग बणावै।

(ब) हिरोशिमा रै सत्यानास रौ जापानियां रै दिल अर दिमाग पै घणौ असर पड़ियौ। बठै रा साहित्यकारां रै आगै तौ आज ई हिरोशिमा सूं हीज बळ रैयौ है अर राष्ट्रीय चेतनावाळा जापानियां रा काळजा में तौ आ होळी पीढियां तांई सुळगती रैवैला।

(स) सवारा सूधी जूझारां री देवळी पै गई। अैटम बम सूं मरियोड़ां री याद में काळै भाठै री समाधि बणायोड़ी है। सगळा जणां बठै जाय माथौ झुकायौ, ढोल पै ताल लागी। ताल रै सागै बैंड री धुन गगन गुंजाय दीधौ– अैटम–बम कदैई नीं, कदैई नीं।